सूरह — एक कहानी

सूरह अत-तौबह

तौबह

पूरा सफ़र — वो सूरह जिस पर बिस्मिल्लाह नहीं —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 9 • 129 आयतें • मदनी

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

व इन अहदुम्-मिनल्-मुश्रिकीनस्-तजारक फ़-अजिर्हु हत्ता यस्म'अ कलामल्-लाह
6. और अगर मुश्रिकों में से कोई तुमसे पनाह माँगे तो उसे पनाह दो ताकि वो अल्लाह का कलाम सुन ले।

ला तह्ज़न इन्नल्-लाह म'अना
40. ग़म मत कर; बेशक अल्लाह हमारे साथ है।

क़ुल लंय्युसीबना इल्ला मा कतबल्-लाहु लना
51. कहो: हमें वही पहुँचेगा जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दिया।

अ फ़-मन अस्स बुन्यानहू 'अला तक़्वा मिनल्-लाहि व रिज़्वानिन ख़ैर
109. क्या वो बेहतर है जिसने अपनी इमारत तक़वा और अल्लाह की रज़ामंदी पर रखी...?

या अय्युहल्-लज़ीन आमनुत्-तक़ुल्-लाह व कूनू म'अस्-सादिक़ीन
119. ऐ ईमान वालो, अल्लाह से डरो और सच्चों के साथ हो जाओ।

लक़द जा-अकुम रसूलुम्-मिन अन्फ़ुसिकुम 'अज़ीज़ुन 'अलैहि मा 'अनित्तुम
128. बेशक तुम्हारे पास तुम ही में से एक रसूल आया; तुम्हारी तकलीफ़ उस पर भारी गुज़रती है।

वो सूरह जिस पर बिस्मिल्लाह नहीं

बेटा, सब से पहले आप इस सूरह में एक ख़ास बात देखेंगे: **ये क़ुरआन की वाहिद सूरह है जो 'बिस्मिल्लाहिर्-रहमानिर्-रहीम' से शुरू नहीं होती।**

ख़ुद सहाबा ने इस पर गुफ़्तगू की। 'उस्मान (रज़ि0) से रिवायत है कि उन्होंने समझाया कि सूरह अल-अन्फ़ाल और सूरह अत-तौबह मज़मून में क़रीब थीं और तक़रीबन एक ही दौर में नाज़िल हुईं, और उनके लिए वाज़ेह न किया गया कि अत-तौबह अलग है, इस लिए दोनों को दरमियान की लाइन के बग़ैर साथ रख दिया गया।

और दूसरे उलमा ने एक वजह मज़मून से जोड़ी: **ये सूरह उन लोगों के साथ मुआहिदे ख़त्म करने के एलान से खुलती है जिन्होंने उन्हें तोड़ा था — और 'अल्लाह के नाम से जो बेहद रहम वाला, निहायत रहम करने वाला है' किसी क़त्'-ए-ताल्लुक़ के एलान के सर पर नहीं बैठता।** बेटा, आप जो भी वजह लें, ये ग़ैर-मौजूदगी ख़ुद इस सूरह के लहजे का हिस्सा है।

'बरा-अतुम्-मिनल्-लाहि व रसूलिही इलल्-लज़ीन 'आहत्तुम मिनल्-मुश्रिकीन — अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से बरी होने का एलान उन मुश्रिकों की तरफ़ जिन से तुमने मुआहिदा किया था।'

बेटा, और पस-मंज़र समझिए, क्योंकि ये सूरह अक्सर उस के बग़ैर नक़्ल की जाती है। **बरसों से ऐसे क़बीलों के साथ मुआहिदे होते और टूटते रहे थे जो मुआहिदे की मौजूदगी में हमला कर देते थे।** और अल्लाह ने इत्तिला दी: चार महीने महफ़ूज़ आमद-ओ-रफ़्त, और फिर मुआहिदा तोड़ने वालों के साथ मुआहिदे ख़त्म।

और ग़ौर कीजिए कि उसी हिस्से में क्या एहतियात से महफ़ूज़ रखा गया: **'इल्लल्-लज़ीन 'आहत्तुम मिनल्-मुश्रिकीन सुम्म लम यन्क़ुसूकुम शै-अंव्-व लम युज़ाहिरू 'अलैकुम अहदन फ़-अतिम्मू इलैहिम 'अह्दहुम इला मुद्दतिहिम — सिवाए उन के जिन से तुमने मुआहिदा किया और फिर उन्होंने तुम्हारे साथ कोई कमी न की और न तुम्हारे ख़िलाफ़ किसी की मदद की — तो उनका मुआहिदा उनकी मुद्दत तक पूरा करो — इन्नल्-लाह युहिब्बुल्-मुत्तक़ीन** — बेशक, अल्लाह परहेज़गारों से मोहब्बत करते हैं।'

बेटा, इसे ज़ेहन में रखिए। **जिन्होंने अपनी बात निभाई उनके मुआहिदे आख़िरी दिन तक पूरे किए जाने थे। ख़ात्मा मुआहिदा तोड़ने वालों पर लागू हुआ।**

और फिर, बेटा, एक आयत जो इस सूरह को चुन चुन कर नक़्ल करने वाले तक़रीबन कभी नक़्ल नहीं करते:

'व इन अहदुम्-मिनल्-मुश्रिकीनस्-तजारक फ़-अजिर्हु हत्ता यस्म'अ कलामल्-लाह — और अगर मुश्रिकों में से कोई एक भी तुमसे पनाह माँगे, तो उसे पनाह दो ताकि वो अल्लाह का कलाम सुन ले — सुम्म अब्लिग़्हु मअ्मनह — और फिर उसे

उसकी अमन की जगह तक पहुँचा दो — ज़ालिक बि-अन्नहुम क़ौमुल्-ला यअ्लमून — ये इस लिए कि वो ऐसे लोग हैं जो जानते नहीं।'

बेटा, इसे दोबारा पढ़िए। **जंग की हालत के बीच में, मुख़ालिफ़ तरफ़ का कोई फ़र्द जो अमन माँगे उसे पनाह दी जाए, क़ुरआन सुनने का मौक़ा दिया जाए, और फिर महफ़ूज़ तरीक़े से वापस पहुँचाया जाए** — चाहे वो क़ुबूल न भी करे।

बेटा, और दी गई वजह ख़ूबसूरत है: '**वो ऐसे लोग हैं जो जानते नहीं**'। **ना-जानकारी को रहमत की वजह बनाया गया, दुश्मनी की नहीं।**

वो नूर बुझाना चाहते हैं

फिर सूरह उन लोगों की सोच बयान करती है जो बार बार अपनी बात तोड़ते रहे: '**ला यर्क़ुबून फ़ी मुअ्मिनिन इल्लंव्-व ला ज़िम्मह** — वो किसी मोमिन के मामले में न रिश्तेदारी का लिहाज़ करते हैं न अह्द का।'

'**यश्तरू बि-आयातिल्-लाहि समनन क़लीला** — उन्होंने अल्लाह की आयतों के बदले **थोड़ी सी क़ीमत** ले ली।'

और ये एक उसूल क़ायम करती है: '**फ़-इन तबू व अक़ामुस्-सलात व आतवुज़्-ज़कात फ़-इख़्वानुकुम फ़िद्-दीन — मगर अगर वो तौबह कर लें, नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें, तो वो दीन में तुम्हारे भाई हैं।**'

बेटा, ग़ौर कीजिए दरवाज़ा दुश्मन से **भाई** तक कितनी जल्दी घूम जाता है। 'साबिक़ दुश्मन जिस पर नज़र रखी जाए' नहीं — **भाई।**

और फिर, बेटा, एक आयत जिसने चौदह सदियों से इस उम्मत को तसल्ली दी है:

'**युरीदून अंय्युत्फ़िऊ नूरल्-लाहि बि-अफ़्वाहिहिम — वो अल्लाह के नूर को अपने मुँहों से बुझाना चाहते हैं — व यअ्बल्-लाहु इल्ला अंय्युतिम्म नूरहू व लौ करिहल्-काफ़िरून — मगर अल्लाह अपने नूर को पूरा करने के सिवा कुछ क़ुबूल नहीं करते, चाहे काफ़िरों को बुरा लगे।**'

बेटा, तस्वीर महसूस कीजिए: **लोग सूरज पर फूँक मार रहे हैं।** एक ऐसी रौशनी पर

अपने मुँह से फूँकते हुए जो पूरे आसमान को भरे हुए है।

और 'यअ्बल्-लाहु इल्ला' — अल्लाह **इनकार** करते हैं सिवाए इस के कि उनका नूर मुकम्मल हो। 'अल्लाह इसकी हिफ़ाज़त करेंगे' नहीं — **वो कोई दूसरा नतीजा मानते ही नहीं।**

फिर सूरह एक मोमिन के अपने घर के अंदर के ख़तरे से ख़बरदार करती है: '**या अय्युहल्-लज़ीन आमनू ला तत्तख़िज़ू आबा-अकुम व इख़्वानकुम औलिया-अ इनिस्-तहब्बुल्-कुफ़्र 'अलल्-ईमान** — अपने बाप और भाइयों को दोस्त मत बनाओ अगर वो ईमान पर कुफ़्र को तरजीह दें।'

और फिर वो आयत जो हर दिल को नापती है, बेटा: '**क़ुल इन काना आबाउकुम व अब्नाउकुम व इख़्वानुकुम व अज़्वाजुकुम व 'अशीरतुकुम व अम्वालुनिक़्-तरफ़्तुमूहा व तिजारतुन तख़्शौन कसादहा व मसाकिनु तर्ज़ौनहा अहब्ब इलैकुम मिनल्-लाहि व रसूलिही व जिहादिन फ़ी सबीलिही फ़-तरब्बसू — कहो: अगर तुम्हारे बाप, तुम्हारे बेटे, तुम्हारे भाई, तुम्हारी बीवियाँ, तुम्हारे रिश्तेदार, वो माल जो तुमने कमाया, वो तिजारत जिसके मंदे पड़ने का तुम्हें डर है, और वो घर जिन से तुम ख़ुश हो — तुम्हें अल्लाह और उसके रसूल से ज़्यादा महबूब हैं — तो इंतेज़ार करो।**'

बेटा, देखिए वो फ़ेहरिस्त कितनी ख़ास है। ये ठीक उन चीज़ों के नाम लेती है जिन से एक शख़्स वाक़ई मोहब्बत करता है: ख़ानदान, जमा-पूँजी, एक कारोबार जिसकी फ़िक्र उसे रहती है, और एक घर जिस पर उसे फ़ख़्र है। **और ये उन से मोहब्बत करने से मना नहीं करती। ये तरतीब के बारे में पूछती है।**

ग़ार के दो

और अब, बेटा, सूरह हिजरत का एक लम्हा याद करती है — और उस में वो सब से ख़ूबसूरत जुमलों में से एक है जो किसी इंसान ने कभी कहा।

नबी ﷺ और अबू बक्र (रज़ि0) ग़ार-ए-सौर में छुपे थे, और क़ुरैश के आदमी, निशान ढूँढते हुए, ग़ार के दहाने तक आ पहुँचे। अबू बक्र ने कहा, जैसा रिवायात में है: **अगर उन में से कोई अपने क़दमों की तरफ़ देख ले, तो हम उसे नज़र आ जाएँगे।** और नबी

ﷺ ने फ़रमाया: **तुम्हारा क्या ख़याल है उन दो के बारे में जिनका तीसरा अल्लाह है?**

'इल्ला तन्सुरूहु फ़-क़द नसरहुल्-लाहु इज़ अख़्रजहुल्-लज़ीन कफ़रू सानियस्-नैनि इज़ हुमा फ़िल्-ग़ार — अगर तुम उसकी मदद न करो, तो अल्लाह पहले ही उसकी मदद कर चुके जब काफ़िरों ने उसे निकाल दिया था, दो में का दूसरा, जब वो दोनों ग़ार में थे — इज़ यक़ूलु लि-साहिबिही ला तह्ज़न इन्नल्-लाह म'अना — जब उसने अपने साथी से कहा: ग़म मत कर; बेशक अल्लाह हमारे साथ है।'

बेटा, '**ला तह्ज़न इन्नल्-लाह म'अना**' — ग़म मत कर; अल्लाह हमारे साथ है।

उस सूरत-ए-हाल पर ग़ौर कीजिए जिसमें ये अल्फ़ाज़ कहे गए। **दो आदमी एक ग़ार में। बाहर खोजी का एक लश्कर। न हथियार, न निकलने का रास्ता, न कोई मंसूबा।** हर नज़र आने वाली हक़ीक़त कह रही थी कि बात ख़त्म है।

और उन्होंने ये नहीं कहा 'हम ठीक रहेंगे' या 'वो हमें नहीं पाएँगे'। उन्होंने कहा: **अल्लाह हमारे साथ है।**

बेटा, इस जुमले को अरबी में याद कर लीजिए और अपनी सब से बुरी रातों के लिए सँभाल कर रखिए। **ये आपसे किसी नतीजे का वादा नहीं करता। ये आपको बताता है कि कौन मौजूद है।**

'फ़-अन्ज़लल्-लाहु सकीनतहू 'अलैहि व अय्यदहू बि-जुनूदिल्-लम् तरौहा — तो अल्लाह ने उस पर अपनी तसल्ली उतारी और ऐसे लश्करों से उसकी ताईद की जिन्हें तुमने नहीं देखा।'

बेटा, '**सकीनह**' — एक ठहराव वाला सुकून जो दिल पर उतरता है। और 'जुनूदिल्-लम् तरौहा' — ऐसे लश्कर जो तुम देख नहीं सकते। बेटा, **आपको अंदाज़ा भी नहीं कि कितनी बार आपका दिफ़ा' किसी ऐसी चीज़ ने किया जिसे आपने कभी महसूस ही नहीं किया।**

'व ज'अल कलिमतल्-लज़ीन कफ़रूस्-सुफ़्ला व कलिमतुल्-लाहि हियल्-'उल्या — और उसने काफ़िरों की बात को **सब से नीचा** कर दिया, जब कि अल्लाह का कलिमा ही **सब से बुलंद** है — **वल्लाहु 'अज़ीज़ुन हकीम** — और अल्लाह ग़ालिब,

हिकमत वाले हैं।'

निकल पड़ो, हल्के हो या भारी

इस सूरह का बड़ा हिस्सा तबूक की मुहिम के बारे में है, बेटा — और आपको हालात जान लेने चाहिए। **ये गर्मियों की शिद्दत में, फ़सलों की कटाई के वक़्त, उस दौर की सब से बड़ी सल्तनत की तरफ़ सैंकड़ों मील के सफ़र के लिए बुलाई गई। इस की हर चीज़ मुश्किल थी।**

और ठीक इसी लिए इसने लोगों को अलग कर दिया।

'**इन्फ़िरू ख़िफ़ाफ़ंव्-व सिक़ालंव्-व जाहिदू बि-अम्वालिकुम व अन्फ़ुसिकुम फ़ी सबीलिल्-लाह — निकल पड़ो, चाहे हल्के हो या भारी, और अपने मालों और अपनी जानों से अल्लाह की राह में कोशिश करो — ज़ालिकुम ख़ैरुल्-लकुम इन कुन्तुम तअ्लमून** — ये तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम जानते।'

बेटा, '**ख़िफ़ाफ़ंव्-व सिक़ालन**' — **हल्के हो या भारी।** उलमा ने समझाया: जवान हो या बूढ़ा, अमीर हो या ग़रीब, शौक़ से हो या बोझल दिल से, कम ज़िम्मेदारियों के साथ हो या बहुत सी। **तुम्हारी जो भी हालत हो, निकल पड़ो।**

बेटा, इसे एक उसूल बना लीजिए: **सही काम करने के लिए कभी एक बिल्कुल मुनासिब लम्हा नहीं आता। 'हल्का' महसूस होने का इंतेज़ार करते रहना वो तरीक़ा है जिस से एक पूरी उम्र गुज़र जाती है।**

'**लौ काना 'अरज़न क़रीबंव्-व सफ़रन क़ासिदल्-लत्तब'ऊक — अगर ये आसान फ़ायदा और छोटा सफ़र होता तो वो ज़रूर तुम्हारे पीछे चल पड़ते — व लाकिम्-ब'उदत 'अलैहिमुश्-शुक़्क़ह — मगर मसाफ़त उन्हें लंबी लगी।**'

बेटा, वो आयत एक मुस्तक़िल इंसानी क़िस्म बयान करती है: **हर उस चीज़ के लिए जोश से भरे हुए जिसमें जल्दी फ़ायदा और कम क़ीमत हो, और ग़ायब जब काम लंबा हो और अज्र दूर।**

और उन्होंने बहाने बनाए, और कुछ ने पीछे रुकने की इजाज़त माँगी, और सूरह पूरा

सिलसिला खोल देती है — वो जिन्होंने झूठ बोला, वो जो वाक़ई क़ासिर थे, और वो जो इस लिए रोए कि उन्हें सवारी न मिली: '**तवल्लौ व अअ्युनुहुम तफ़ीज़ु मिनद्-दम्'इ हज़नन अल्ला यजिदू मा युन्फ़िक़ून** — वो इस ग़म में लौट गए कि उन्हें ख़र्च करने को कुछ न मिला, **जब कि उनकी आँखें आँसुओं से बह रही थीं।**'

बेटा, उन्हें याद रखिए। **कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनके दिल एक अच्छे काम में होते हैं चाहे उनके हालात उन्हें उस से बाहर रखें — और अल्लाह ने उनके आँसू अपनी किताब में दर्ज कर लिए।**

और फिर, बेटा, हर परेशान दिल के लिए एक हिदायत:

'**क़ुल लंय्युसीबना इल्ला मा कतबल्-लाहु लना हुव मौलाना — कहो: हमें वही पहुँचेगा जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दिया; वही हमारा कारसाज़ है — व 'अलल्-लाहि फ़ल्-यतवक्कलिल्-मुअ्मिनून — और अल्लाह ही पर मोमिनीन को भरोसा करना चाहिए।**'

बेटा, ये एक आयत इस ख़ौफ़ को ख़त्म कर देती है कि लोग आपके साथ क्या कर सकते हैं। **आप तक वही पहुँचता है जो पहले से लिखा जा चुका — और जिसने उसे लिखा वो आपका मौला है।**

एक खाई के किनारे पर इमारत

फिर सूरह मुनाफ़िक़ों को तफ़्सील से बे-नक़ाब करती है, बेटा — वो जो जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ते थे मगर उस के ख़िलाफ़ काम करते थे। और ये उनके एक मंसूबे का बयान करती है।

उन्होंने एक मस्जिद बनाई — इबादत की जगह — इस इरादे से कि वो फूट का और मोमिनीन को कमज़ोर करने का अड्डा बने। और अल्लाह ने उसकी हक़ीक़त खोल दी, और नबी ﷺ ने उसे गिरा देने का हुक्म दिया।

'**वल्-लज़ीनत्-तख़ज़ू मस्जिदन ज़िरारंव्-व कुफ़्रंव्-व तफ़्रीक़म्-बैनल्-मुअ्मिनीन** — और वो जिन्होंने एक मस्जिद बनाई **नुक़सान पहुँचाने**, और **कुफ़्र**, और **मोमिनीन के दरमियान फूट डालने** के लिए — **व ल-यह्लिफ़ुन्न इन अरद्ना**

इल्लल्-हुस्ना — और वो ज़रूर क़सम खाएँगे: हमने तो सिर्फ़ भलाई चाही थी।'

बेटा, इसे ग़ौर कीजिए: **उन्होंने क़सम खाई कि उनकी नियत अच्छी थी। एक इमारत बाहर से मस्जिद और अंदर से एक हथियार हो सकती है।**

और फिर, बेटा, नियत के बारे में क़ुरआन की सब से अहम मिसालों में से एक आती है:

'**अ फ़-मन अस्स बुन्यानहू 'अला तक़्वा मिनल्-लाहि व रिज़्वानिन ख़ैर — क्या वो बेहतर है जिसने अपनी इमारत अल्लाह के तक़वा और उसकी रज़ामंदी पर रखी — अम मन अस्स बुन्यानहू 'अला शफ़ा जुरुफ़िन हारिन फ़न्हार बिही फ़ी नारि जहन्नम — या वो जिसने अपनी इमारत एक गिरती हुई खाई के किनारे पर रखी, तो वो उसे ले कर जहन्नम की आग में गिर पड़ी?**'

बेटा, दोनों का तसव्वुर कीजिए। **दो इमारतें। बाहर से वो बिल्कुल एक जैसी लग सकती हैं — वही दीवारें, वही ऊँचाई, वही दरवाज़े।**

फ़र्क़ पूरी तरह नीचे है। एक 'तक़वा' और अल्लाह की रज़ामंदी की चाहत पर खड़ी है। दूसरी 'शफ़ा जुरुफ़िन हार' पर बैठी है — **एक कटी हुई रेत की ढलान का होंठ, वो किनारा जो ठीक उस लम्हे तक ठोस लगता है जब वो ढह जाता है।**

बेटा, और आयत ये नहीं कहती कि दूसरी इमारत गिर गई। ये कहती है कि वो **उसे ले कर** आग में गिरी। **बनाने वाला उसके साथ नीचे जाता है।**

बेटा, इसे हर उस चीज़ पर लगाइए जो आप बनाते हैं: एक करियर, एक साख़, एक ख़ानदान, एक प्रोजेक्ट, अपनी इबादत तक। **पूछिए कि वो किस पर खड़ी है। क्योंकि दीवारों से ये पता नहीं चलता।**

अल्लाह ने ख़रीद लिया

और अब, बेटा, क़ुरआन की सब से हैरत-अंगेज़ आयतों में से एक — एक बिक्री का मुआहिदा, जिसमें ख़रीदार अल्लाह हैं:

'**इन्नल्-लाहश्-तरा मिनल्-मुअ्मिनीन अन्फ़ुसहुम व अम्वालहुम बि-अन्न**

लहुमुल्-जन्नह — बेशक, अल्लाह ने मोमिनीन से उनकी जानें और उनके माल ख़रीद लिए, इस के बदले कि उनके लिए जन्नत है।'

'व'अ्दन 'अलैहि हक़्क़न फ़ित्-तौराति वल्-इंजीलि वल्-क़ुरआन — ये उस पर एक **सचा वादा** है, तौरात में और इंजील में और क़ुरआन में — **व मन औफ़ा बि-'अह्दिही मिनल्-लाह — और अल्लाह से बढ़ कर अपना अह्द कौन पूरा करता है?'**

'फ़स्तब्शिरू बि-बै'इकुमुल्-लज़ी बाय'अ्तुम बिह — तो अपने उस सौदे पर ख़ुश हो जाओ जो तुमने किया — व ज़ालिक हुवल्-फ़ौज़ुल्-'अज़ीम — और यही अज़ीम कामयाबी है।'

बेटा, इस सौदे की शर्तें देखिए। **आपकी जान और आपका माल पहले से उन्ही का है — उन्होंने दोनों बनाए। और फिर भी वो आप से उन्हें ख़रीदने की पेश-कश करते हैं, और क़ीमत जन्नत में अदा करते हैं।**

और वो ये मुआहिदा तीन किताबों में दर्ज करते हैं, और पूछते हैं: अल्लाह से बेहतर अपनी बात कौन निभाता है?

बेटा, और फिर हुक्म: **'फ़स्तब्शिरू'** — अपने किए हुए सौदे पर **ख़ुश हो जाओ।** बेटा, हम आम तौर पर महसूस करते हैं कि इताअत हम से कुछ छीनती है। **ये आयत उसे बिल्कुल नए अंदाज़ में रख देती है: आपने अपनी ज़िंदगी का सब से बेहतरीन सौदा कर लिया, और ख़रीदार दस्तख़त कर चुके।**

वो तीन जो पीछे रह गए

और अब, बेटा, पूरे क़ुरआन के सब से दिल हिला देने वाले बयानात में से एक — और ये तीन आम मोमिनीन के बारे में है जिन से एक ग़लती हो गई।

तीन सहाबा बिना किसी उज़्र के तबूक से पीछे रह गए। जब लश्कर लौट आया, मुनाफ़िक़ बड़े सँवरे हुए झूठ ले कर आए और उन्हें ज़ाहिर पर क़ुबूल कर लिया गया। **मगर इन तीनों ने सच कहा: हमारे पास कोई उज़्र नहीं।**

और उनका सोशल बॉयकॉट कर दिया गया। नबी ﷺ ने जमाअत को हुक्म दिया कि

उन से बात न करें। **पचास दिन तक किसी ने उनके सलाम का जवाब न दिया।** उन में से एक, क'अब इब्न मालिक (रज़ि0), ने बयान किया कि वो नबी ﷺ को सलाम करते और देखते कि आपके होंठ जवाब में हिलते हैं या नहीं, और कैसे उनके इर्द-गिर्द ज़मीन तक बदली हुई लगती थी।

और फिर ये आयत उतरी:

'**व 'अलस्-सलासतिल्-लज़ीन ख़ुल्लिफ़ू** — और (उसने तौबह क़ुबूल की) **उन तीनों की जो पीछे छोड़ दिए गए** — **हत्ता इज़ा ज़ाक़त 'अलैहिमुल्-अर्ज़ु बिमा रहुबत** — **यहाँ तक कि ज़मीन, अपनी तमाम वुस'अत के बावजूद, उन पर तंग हो गई** — **व ज़ाक़त 'अलैहिम अन्फ़ुसुहुम** — **और उनकी अपनी जानें उन पर तंग हो गईं** — **व ज़न्नू अल्-ला मल्जअ मिनल्-लाहि इल्ला इलैह** — **और उन्हें यक़ीन हो गया कि अल्लाह से बचने की कोई पनाह नहीं सिवाए उसी की तरफ़** — **सुम्म ताब 'अलैहिम लि-यतूबू** — **फिर उसने उन की तरफ़ रुजू किया ताकि वो तौबह कर सकें** — **इन्नल्-लाह हुवत्-तव्वाबुर्-रहीम** — बेशक, अल्लाह ही तौबह क़ुबूल करने वाले, रहम वाले हैं।'

बेटा, इस आयत को खोल कर देखिए, क्योंकि ये एक ऐसी हालत बयान करती है जिसे बहुत से लोग जानते हैं।

'ज़ाक़त 'अलैहिमुल्-अर्ज़ु बिमा रहुबत' — **ज़मीन उन पर तंग हो गई बावजूद उसकी वुस'अत के।** बेटा, अस्ली परेशानी ऐसी ही महसूस होती है: **दुनिया बेहद बड़ी है, और उस में कहीं भी साँस लेने की जगह नहीं।**

'व ज़ाक़त 'अलैहिम अन्फ़ुसुहुम' — और उनकी **अपनी जानें** उन पर तंग हो गईं। बेटा, ये उस से भी बुरा है — **जब आप न सूरत-ए-हाल से भाग सकते हैं और न ख़ुद से।**

और फिर वो मोड़: 'व ज़न्नू अल्-ला मल्जअ मिनल्-लाहि इल्ला इलैह' — **उन्हें यक़ीन हो गया कि अल्लाह से पनाह सिर्फ़ उसी की तरफ़ है।**

बेटा, इस जुमले के साथ बैठिए। ये इस दीन की अज़ीम सचाइयों में से एक है। **जब आप उनकी नाराज़गी से भाग रहे होते हैं, तो भागने की कोई सिम्त है ही नहीं सिवाए उनकी तरफ़। कोई तीसरी जगह नहीं।**

'सुम्म ताब 'अलैहिम लि-यतूबू' — **फिर उसने उन की तरफ़ रुजू किया ताकि वो तौबह कर सकें।**

बेटा, उस जुमले की तरतीब बहुत ग़ौर से देखिए। **अल्लाह ने पहले उनकी तरफ़ रुजू किया, ताकि वो तौबह कर सकें। उनकी तौबह वो चीज़ न थी जिसने उनकी तवज्जोह कमाई — उनकी रहमत पहले आई और उसने तौबह को मुमकिन बनाया।**

बेटा, इसका मतलब ये है कि **हर बार जब आपने उन की तरफ़ लौटने की ख़्वाहिश महसूस की, वो ख़्वाहिश ख़ुद उनका दिया हुआ तोहफ़ा थी। उन्होंने आप की तरफ़ रुजू किया उस से पहले कि आपने उन की तरफ़ किया।**

और फिर अगली आयत, बेटा — उनकी कहानी से निकला हुआ हुक्म:

'या अय्युहल्-लज़ीन आमनुत्-तक़ुल्-लाह व कूनू म'अस्-सादिक़ीन — ऐ ईमान वालो, अल्लाह से डरो और सच्चों के साथ हो जाओ।'

बेटा, यही पचास दिनों का सबक़ है। **झूठ बोलने वालों को फ़ौरन माफ़ कर दिया गया और वो हमेशा के लिए घाटे में रहे। सच्चों को पचास दिन सज़ा मिली और उनकी सचाई क़ुरआन में वक़्त के इख़्तिताम तक दर्ज हो गई।**

क'अब (रज़ि0) ने बाद में कहा कि अल्लाह ने उन्हें उस दिन की सचाई से बड़ी कोई नेमत न दी, और ये कि उन्होंने इरादा कर लिया कि ज़िंदगी भर फिर कभी झूठ न बोलेंगे।

तुम ही में से एक रसूल

और अब, बेटा, ये सूरह — जो क़ुरआन में सब से सख़्त रही, जिस पर बिस्मिल्लाह नहीं, तंबीहों और बे-नक़ाब कर देने से भरी — नबी ﷺ के बारे में दो सब से नर्म आयतों पर ख़त्म होती है:

'लक़द जा-अकुम रसूलुम्-मिन अन्फ़ुसिकुम — बेशक तुम्हारे पास तुम ही में से एक रसूल आया — 'अज़ीज़ुन 'अलैहि मा 'अनित्तुम — तुम्हारी तकलीफ़ उस पर भारी गुज़रती है — हरीसुन 'अलैकुम — तुम्हारे लिए शिद्दत से फ़िक्रमंद — बिल्-

मुअ्मिनीन रऊफ़ुर्-रहीम — और मोमिनीन के लिए निहायत शफ़ीक़, रहम वाला।'

बेटा, हर जुमला लीजिए।

'**मिन अन्फ़ुसिकुम**' — **तुम्हारी अपनी जानों में से।** तुम ही में से एक। उन्होंने भूक, नुक़सान, ग़म, और अपने बच्चों की मौत देखी। **वो ऊपर से नहीं भेजे गए कि दूर से आपको हिदायत दें।**

"**अज़ीज़ुन 'अलैहि मा 'अनित्तुम**' — उन पर **भारी** है, उन्हें तकलीफ़ देता है, कि आप दुख उठाएँ। बेटा, **आपकी मुश्किल उन्हें परेशान करती थी। चौदह सदी पहले, आपकी तकलीफ़ पहले से किसी को ग़मज़दा कर रही थी।**

'**हरीसुन 'अलैकुम**' — आपके लिए शिद्दत से, बे-ताबी से फ़िक्रमंद। ये लफ़्ज़ उस शख़्स का बयान करता है जो किसी चीज़ को बे-हद चाहता हो। **वो बे-ताबी से चाहते थे कि आप बच जाएँ।**

'**बिल्-मुअ्मिनीन रऊफ़ुर्-रहीम**' — और बेटा, ये ग़ौर कीजिए: '**रऊफ़**' और '**रहीम**' ख़ुद अल्लाह के दो नाम हैं, और उन्होंने इस आयत में दोनों अपने रसूल ﷺ को अता कर दिए। **किसी दूसरे नबी का बयान इस तरह अल्लाह के दो नामों से नहीं हुआ।**

और सूरह की आख़िरी आयत, बेटा — उस लम्हे के लिए हिदायत जब सब मुँह मोड़ लें:

'**फ़-इन तवल्लौ फ़-क़ुल हस्बियल्-लाहु ला इलाह इल्ला हू — तो अगर वो मुँह मोड़ लें, तो कहो: मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है; उसके सिवा कोई माबूद नहीं — 'अलैहि तवक्कल्तु — उसी पर मैंने भरोसा किया — व हुव रब्बुल्-'अर्शिल्-'अज़ीम — और वही अज़ीम अर्श का रब है।**'

बेटा, '**हस्बियल्लाह**' — अल्लाह मेरे लिए **काफ़ी** हैं। रिवायत है कि जो इसे सात बार कहे, अल्लाह उसे हर उस चीज़ में काफ़ी हो जाते हैं जो उसे फ़िक्रमंद करे।

बेटा, तो ग़ौर कीजिए ये सूरह कैसे ख़त्म होती है। **ये एक क़त्-ए-ताल्लुक़ से शुरू हुई, और 'मेरे लिए अल्लाह काफ़ी हैं' पर ख़त्म होती है।** इसने एक सौ बीस से ज़्यादा

आयतें सच्चों को झूठों से अलग करने में सर्फ़ कीं — **और फिर ये आपको ये बता कर बंद होती है कि अगर हर एक शख़्स भी मुँह मोड़ ले, तब भी आपके पास वो सब कुछ है जिसकी आपको ज़रूरत है।**

और बेटा, यही उस तन्हाई का जवाब है जो कभी कभी हक़ को थामे रखने के साथ आती है। कह दीजिए: **हस्बियल्-लाहु ला इलाह इल्ला हू, 'अलैहि तवक्कल्तु, व हुव रब्बुल्-'अर्शिल्-'अज़ीम।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. जिन्होंने अपनी बात निभाई, उनके मुआहिदे पूरे किए गए — क़त्-ए-ताल्लुक़ मुआहिदा तोड़ने वालों पर था।

2. जंग की हालत में भी, पनाह माँगने वाले को पनाह, क़ुरआन सुनने का मौक़ा, और महफ़ूज़ वापसी दी जाती है।

3. वो अपने मुँहों से सूरज पर फूँक मारते हैं — और अल्लाह अपने नूर के मुकम्मल होने के सिवा कुछ मानते ही नहीं।

4. 'ला तह्ज़न इन्नल्-लाह म'अना' — ये किसी नतीजे का वादा नहीं करता; ये बताता है कि कौन मौजूद है।

5. 'हल्के हो या भारी' — सही काम के लिए कभी मुनासिब लम्हा नहीं आता।

6. दो इमारतें बिल्कुल एक जैसी लग सकती हैं; फ़र्क़ पूरी तरह नीचे है। पूछिए आपकी किस पर खड़ी है।

7. उसने उन की तरफ़ रुजू किया ताकि वो तौबह कर सकें — उनकी रहमत पहले आती है और आपकी वापसी को मुमकिन बनाती है। और सच्चों के साथ रहो, चाहे उसकी जो भी क़ीमत हो।

हस्बियल्-लाहु ला इलाह इल्ला हू, 'अलैहि तवक्कल्तु व हुव रब्बुल्-'अर्शिल्-'अज़ीम। आमीन।